Raga of the Month November 2025 - Raga DakshinatyaBasant

राग दाक्षिणात्य बसंत/ शुद्ध सोहनी/ आदिबसंत/ बसंतपंचम

कर्नाटक पद्धति में यह राग "वसंत" नाम से ही जाना जाता है। हिंदुस्तानी संगीत में जो वसंत राग प्रचलित है, उसका स्वरूप अलग है। अतएव इस राग को स्वतंत्र रूप से पहचान हेतु हिंदुस्तानी संगीत में 'दाक्षिणात्य बसंत' इस नाम से यह राग जाना जाता है। इस रागमे रिषभ कोमल और बाकी स्वर शुद्ध हैं। हिंदुस्तानी संगीत पद्धतीके किसी थाटमे उसका स्केल के हिसाबसे वर्गीकरण किया जाना संभव नहीं। इस कारण उसके थाट के बारेमे मतभिन्नता है। "अभिनव गीत मंजरी" में इस राग को हटकाम्बरी मेलकर्ता का जन्य राग माना गया है। कई विद्वान इस राग को मायामालवगौल मेलकर्ता , अर्थात भैरव थाट उत्पन्न राग मानते हैं। आरोहमे रिषभ और पंचम वर्ज्य है और अवरोह में केवल पंचम वर्ज्य होने के कारण इस राग की जाति औडव - षाडव है। वादी मध्यम एवं संवादी षडज माना गया है। कर्नाटक संगीत की प्रथा के अनुसार इस राग को किसी भी समय गाया जा सकता है।

आरोह सा, ग म ध , नि ध, सां। अवरोह सां नि ध म, ग , <u>रे</u> सा।

इस राग का स्वर विस्तार पंडित श्री ना रातंजनकरजी के किताब अभिनव गीत मंजरी के भाग 3 में दिया है। जिसका अंश नीचे दिया है।

आज के ऑडियो में हम पंडित रातंजनकरजी द्वारा रचित तीन बंदिशे सुनेंगे- " कैसे कहूं अपनी बिथा ये " और " ऋतु आयो अत सुख कर " - ये दो बंदिशे पंडित के जी गिंडेजी ने गायी है और तीसरी बंदिश "सरस सुगंध फूल खिले" विदुषी अश्विनी भिड़े देशपांडे जी से सुनेंगे।

संदर्भ : १- अभिनव गीत मंजरी भाग 3, २. रागनिधी प्रो. बी सुब्बाराव भाग ४

आभार : पंडित यशवंत महाले, विदुषी अश्विनी भिड़े देशपांडे

01-11 -2025.

Link to the list of 170+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles

https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx

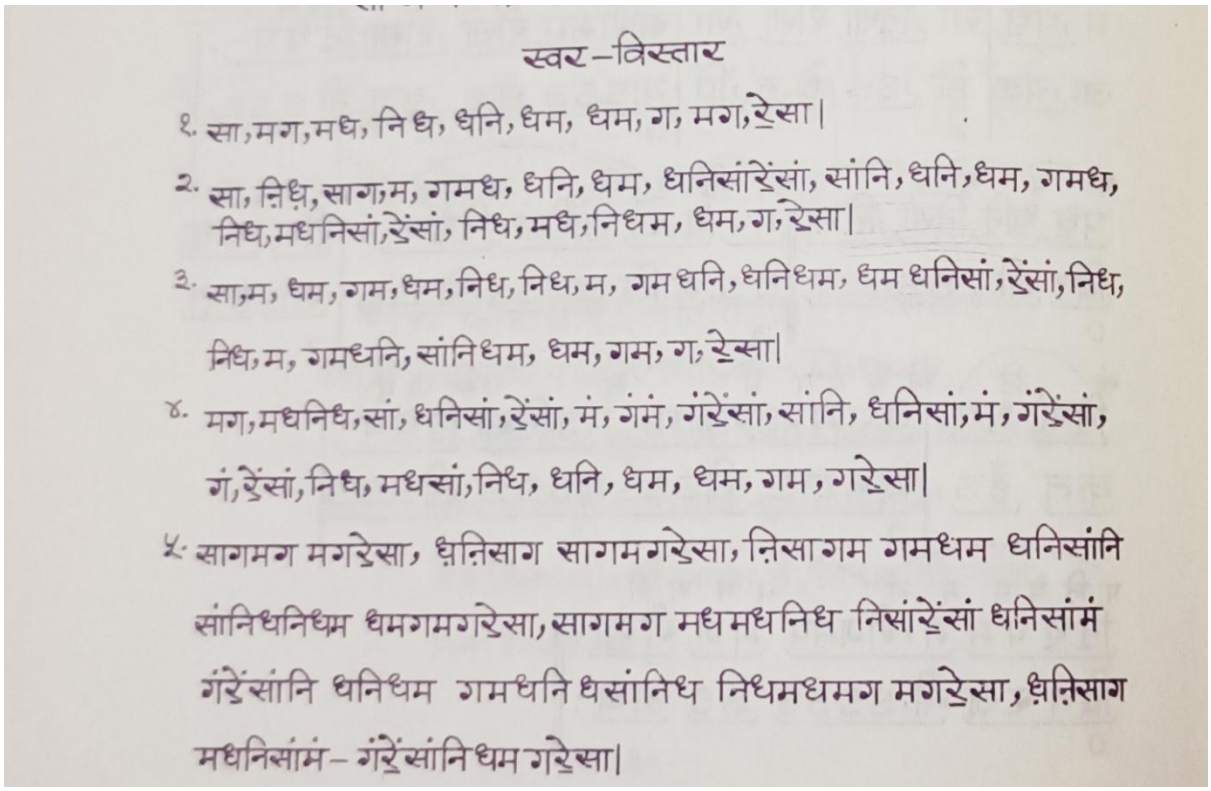

स्वर–विस्तार

१. सा, मग, मध, नि ध, धनि, धम, धम, ग, मग, रेसा।

२. सा, नि़ध़, साग, म, गमध, धनि, धम, धनिसांरेंसां, सांनि, धनि, धम, गमध, निध, मधनिसां, रेंसां, निध, मध, निधम, धम, ग, रेसा।

३. सा, म, धम, गम, धम, निध, निध, म, गम धनि, धनिधम, धम धनिसां, रेंसां, निध, निध, म, गमधनि, सांनि धम, धम, गम, ग, रेसा।

४. मग, मधनिध, सां, धनिसां, रेंसां, मं, गंमं, गंरेंसां, सांनि, धनिसां, मं, गंरेंसां, गं, रेंसां, नि ध, मधसां, निध, धनि, धम, धम, गम, गरेसा।

५. सागमग मगरेसा, ध़नि़साग सागमगरेसा, नि़सागम गमधम धनिसांनि सांनिधनिधम धमगमगरेसा, सागमग मधमधनिध निसांरेंसां धनिसांमं गंरेंसांनि धनिधम गमधनि धसांनिध निधमधमग मगरेसा, ध़नि़साग मधनिसांमं– गंरेंसांनि धम गरेसा।